Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

मध्यकालीन भारत

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: CSP02

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

मध्यकालीन भारत

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष: 8750187501, 011-47532596
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web: www.drishtiias.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिए निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

प्रिय अभ्यर्थियो,

सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी के इच्छुक अभ्यर्थियों द्वारा परीक्षोपयोगी अध्ययन-सामग्री की भारी मांग को देखते हुए हमने दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme) के अंतर्गत **यू.पी.एस.सी. डी.एल.पी.** तैयार की है। इसमें कुल 39 बुकलेट्स (31 सामान्य अध्ययन एवं 8 सीसैट) होंगी, जो 6 विभिन्न पैकटों के रूप में उपलब्ध कराई जाएंगी। हमारे इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ऐसे अभ्यर्थियों को घर बैठे उनकी आवश्यकता के अनुरूप संपूर्ण पाठ्य-सामग्री (प्रारंभिक-सह-मुख्य परीक्षा) उपलब्ध कराना है जो व्यक्तिगत, आर्थिक या किन्हीं अन्य कारणों से दिल्ली आकर कोचिंग नहीं ले सकते।

सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती बाज़ार में हिन्दी माध्यम की स्तरीय पाठ्य-सामग्री का उपलब्ध न होना है और जो पाठ्य-सामग्री बाज़ार में उपलब्ध है, वह इस परीक्षा के पाठ्यक्रम एवं मानकों के अनुरूप नहीं है, जिससे अभ्यर्थियों में सदैव भ्रम की स्थिति बनी रहती है।

अभ्यर्थियों की इन समस्याओं को ध्यान में रखते हुए और उनकी भारी मांग एवं सुझावों के बाद 'दृष्टि प्रबंधन' ने अथक प्रयत्नों द्वारा पाठ्यक्रम में बिखरी एवं जटिल विषयवस्तुओं का एक साथ बहुमूल्य संग्रह करके यू.पी.एस.सी. डी.एल.पी. (प्रारंभिक-सह-मुख्य परीक्षा) तैयार की है।

सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों के बीच संस्थान के तौर पर जहाँ 'दृष्टि' सर्वाधिक लोकप्रिय संस्थान है, वहीं इसका वेबसाइट, मीडिया, प्रकाशन एवं डी.एल.पी. विभाग उत्कृष्ट अनुसंधान एवं विश्लेषण के लिये प्रसिद्ध है, जो परीक्षोन्मुखी एवं परिणामकेंद्रित दृष्टिकोण अपनाते हुए देश के सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों के मार्गदर्शन में पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए विषयवस्तु तैयार करता है।

यू.पी.एस.सी. डी.एल.पी. के प्रथम पैक की बुकलेट 'मध्यकालीन भारत' की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

- यह बुकलेट संपूर्ण पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई है।
- यह बुकलेट प्रारंभिक परीक्षा के लिये अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।
- इस बुकलेट में कुल 10 अध्याय हैं।
- प्रत्येक अध्याय में **यू.पी.एस.सी.** द्वारा आयोजित प्रारंभिक परीक्षा में विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्नों के साथ-साथ संभावित महत्त्वपूर्ण प्रश्नों को भी शामिल किया गया है, जो आगामी परीक्षाओं के लिये अत्यंत लाभदायक सिद्ध होंगे।

विधिक घोषणाएँ

- इस पुस्तक में प्रकाशित सूचनाएँ, समाचार, ज्ञान एवं तथ्य पूरी तरह से सत्यापित किये गए हैं। फिर भी, यदि कोई जानकारी या तथ्य गलत प्रकाशित हो गया हो तो प्रकाशक, संपादक या मुद्रक उससे किसी व्यक्ति-विशेष या संस्था को पहुँची क्षति के लिये ज़िम्मेदार नहीं है।
- हम विश्वास करते हैं कि इस पुस्तक में छपी सामग्री लेखकों द्वारा मौलिक रूप से लिखी गई है। अगर कॉपीराइट उल्लंघन का कोई मामला सामने आता है तो प्रकाशक को ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा।
- सभी विवादों का निपटारा दिल्ली न्यायिक क्षेत्र में होगा।
- © **कॉपीराइट:** दृष्टि पब्लिकेशन्स (A Unit of VDK Publications Pvt. Ltd.), सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रकाशन अथवा उपयोग, प्रतिलिपीकरण, ऐसे यंत्र में भंडारण जिससे इसे पुन: प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानांतरण, किसी भी रूप में या किसी भी विधि से (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार से) प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता।

UPSC DLP

विषय सूची (Contents)

1. पूर्व मध्यकालीन भारत 5–21
2. दिल्ली सल्तनत 22–29
3. खिलजी वंश 30–38
4. तुगलक वंश 39–50
5. सैय्यद एवं लोदी वंश 51–56
6. दिल्ली सल्तनत की शासन प्रणाली 57–73
7. क्षेत्रीय शक्तियाँ : 13वीं-15वीं सदी तक 74–79
8. दक्षिण भारत के राजवंश: विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य 80–90
9. सूफी और भक्ति आंदोलन 91–99
10. मुगल साम्राज्य 100–152

अध्याय
1

पूर्व मध्यकालीन भारत (Early Medieval India)

1.1 कन्नौज के लिये त्रिपक्षीय संघर्ष
1.2 बंगाल का पाल राजवंश
1.3 गुर्जर-प्रतिहार वंश
1.4 राष्ट्रकूट राजवंश
1.5 चोल राजवंश
1.6 भारतीय सामंतवाद
1.7 भारत पर अरबों का आक्रमण
1.8 तुर्क आक्रमणों के पूर्व भारत की राजनीतिक स्थिति
1.9 मुहम्मद गोरी के प्रमुख सैन्य अभियान

1.1 कन्नौज के लिये त्रिपक्षीय संघर्ष *(The Tripartite Struggle for Kannauj)*

750 और 1000 ईस्वी के मध्य उत्तर भारत और दक्षिण भारत में कई शक्तिशाली साम्राज्यों का उदय हुआ। इनमें से तीन वंश ऐसे थे, जिन्होंने आपस में संघर्ष किया। यह संघर्ष कन्नौज पर आधिपत्य के लिये हुआ। इनमें से एक था पाल वंश, जिसका नवीं सदी के मध्य तक पूर्वी भारत में एक शक्तिशाली राज्य था। पश्चिमी भारत और उत्तरी गंगा की घाटी में दसवीं सदी तक प्रतिहार राजवंश का प्रभुत्व था। उधर दक्षिण भारत में राष्ट्रकूटों का वर्चस्व था, जो समय-समय पर उत्तर भारत के प्रदेशों पर भी अपना आधिपत्य स्थापित कर लेते थे। वस्तुत: इन तीनों शक्तिशाली साम्राज्यों के मध्य संघर्ष चलता रहा। यद्यपि इन साम्राज्यों के शासकों ने काफी बड़े-बड़े क्षेत्रों में शांति स्थापित की एवं साहित्य तथा कला को संरक्षण दिया। इन तीनों में सबसे अंत तक शासन राष्ट्रकूट वंश ने किया। वह न केवल उस काल का सबसे शक्तिशाली साम्राज्य था, बल्कि उसने आर्थिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में उत्तर और दक्षिण भारत के मध्य सेतु का भी काम किया।

सातवीं सदी के पूर्वार्द्ध से ही कन्नौज भारत की राजनीति का केन्द्र बिंदु रहा था। उस काल में उत्तरी भारत पर आधिपत्य का कोई भी दावा कन्नौज पर अधिकार के बिना निरर्थक था। कन्नौज तथा उसके मध्यदेश का सामरिक महत्त्व भी था, क्योंकि पालों के लिये मध्य भारत तथा पंजाब और प्रतिहारों एवं राष्ट्रकूटों के लिये गंगा दोआब में पहुँचने के मार्ग पर कन्नौज से ही नियंत्रण होता था। इसके अतिरिक्त गंगा-यमुना दोआब, जो प्रचुर मात्रा में राजस्व का स्रोत था। अत: इस पर बिना नियंत्रण किये कोई भी साम्राज्य शक्तिशाली नहीं हो सकता था।

त्रिपक्षीय संघर्ष के चरण

कन्नौज पर अधिकार के लिये 8वीं सदी के मध्य से आरंभ हुए राष्ट्रकूट, पाल तथा गुर्जर-प्रतिहार राजवंश के मध्य के युद्ध को त्रिपक्षीय संघर्ष के नाम से जाना जाता है।

प्रतिहार शासक वत्सराज द्वारा कन्नौज पर आक्रमण के साथ ही संघर्ष की शुरुआत हुई। कन्नौज का शासक, इंद्रायुध पराजित हुआ तथा उसने वत्सराज का आधिपत्य स्वीकार कर लिया। प्रतिहार गंगा-यमुना के संगम तक पहुँच गए थे और पालों (बंगाल के शासक) का प्रभाव प्रयाग तक बढ़ गया था। परिणामस्वरूप युद्ध अवश्यंभावी हो गया। प्रतिहार नरेश वत्सराज एवं पाल नरेश धर्मपाल के मध्य उत्तर भारत पर विस्तार के लिये संघर्ष आरंभ हो गया। राष्ट्रकूट नरेश ध्रुव ने इस संघर्ष में हस्तक्षेप किया एवं सबसे पहले वत्सराज को पराजित किया। त्रिपक्षीय संघर्ष में राष्ट्रकूट ही दक्षिण भारत की ऐसी पहली शक्ति थी, जिसने उत्तर भारत की राजनीति में हस्तक्षेप किया तथा दक्षिण से उत्तर भारत पर आक्रमण किया। संभवत: धर्मपाल ने भी ध्रुव का आधिपत्य स्वीकार कर लिया। फिर ध्रुव दक्षिण को लौट गया। इन घटनाओं से अंतत: धर्मपाल लाभान्वित हुआ। धर्मपाल ने इन घटनाओं का लाभ उठाते हुए कन्नौज पर आक्रमण कर इंद्रायुध को अपदस्थ कर दिया तथा उसकी जगह चक्रायुध को कन्नौज का शासक नियुक्त किया। चक्रायुध ने धर्मपाल का आधिपत्य स्वीकार कर लिया तथा धर्मपाल ने 'उत्तरापथस्वामिन्' की उपाधि धारण की। हालाँकि इन घटनाओं के बारे में स्पष्ट तिथि का अभाव है।

अध्याय
2

दिल्ली सल्तनत
(Delhi Sultanate)

2.1 दिल्ली सल्तनत की स्थापना
2.2 कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई.)
2.3 शम्सुद्दीन इल्तुतमिश (1211-1236 ई.)
2.4 गयासुद्दीन बलबन (1266-1287 ई.)

1206 ई. में मुहम्मद गोरी की मृत्यु के पश्चात् उसके सन्तानहीन होने के कारण उसके साम्राज्य को उसके तीन गुलामों ने आपस में बाँट लिया। इनमें यल्दौज को गजनी का राज्य क्षेत्र, कुबाचा को सिंध और मुल्तान तथा कुतुबुद्दीन ऐबक को भारतीय राज्य क्षेत्रों पर अधिकार मिला। गोरी के विश्वस्त गुलाम ऐबक ने तराईन के युद्ध के पश्चात् भारत में राज्य विस्तार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। कुतुबुद्दीन ऐबक ने जिस वंश की नींव रखी, उसे मामलूक या गुलाम वंश कहते हैं, क्योंकि वह मुहम्मद गोरी द्वारा खरीदा हुआ गुलाम था।

2.1 दिल्ली सल्तनत की स्थापना *(The Establishment of the Delhi Sultanate)*

मुहम्मद गोरी की मृत्यु के पश्चात् तुर्कों द्वारा भारत के विजित क्षेत्रों पर तुर्की शासन की स्थापना की गई और इस क्षेत्र का प्रथम शासक कुतुबुद्दीन ऐबक बना। 1206 ई. में भारत में तुर्की शासन की स्थापना हुई और 1290 ई. तक उत्तरी भारत में तुर्क सत्ता का आधार मज़बूत हो चुका था। 1206 से 1290 ई. के मध्य इस वंश में अनेक शासक हुए जिनमें प्रमुख शासक कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुतमिश, रज़िया सुल्तान और बलबन थे, जिन्होंने तुर्क सत्ता का सुदृढ़ीकरण किया। मामलूक वंश के शासकों का क्रम निम्नलिखित है–

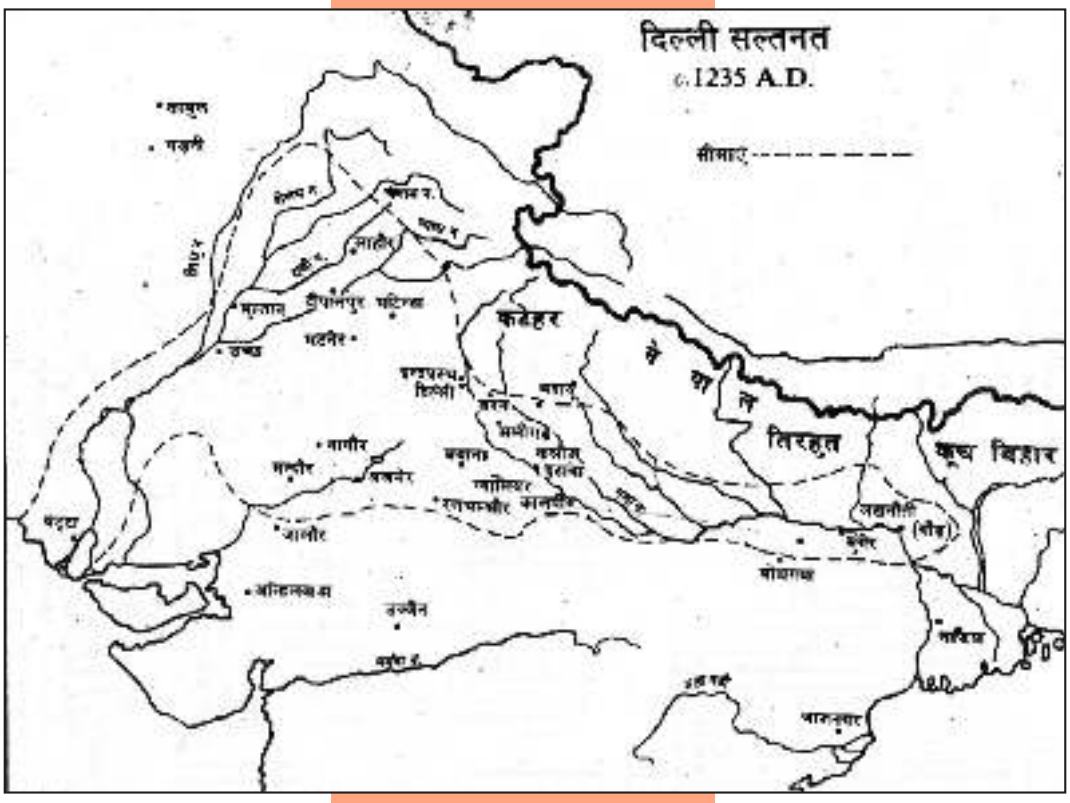

अध्याय
3

खिलजी वंश
(Khilji Dynasty)

3.1 जलालुद्दीन फिरोज़ खिलजी (1290 से 1296 ई.)
3.2 अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.)
3.3 अलाउद्दीन खिलजी के आर्थिक सुधार
3.4 अलाउद्दीन खिलजी के बाज़ार सुधार
3.5 कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी (1316-1320 ई.) और खिलजी वंश का पतन

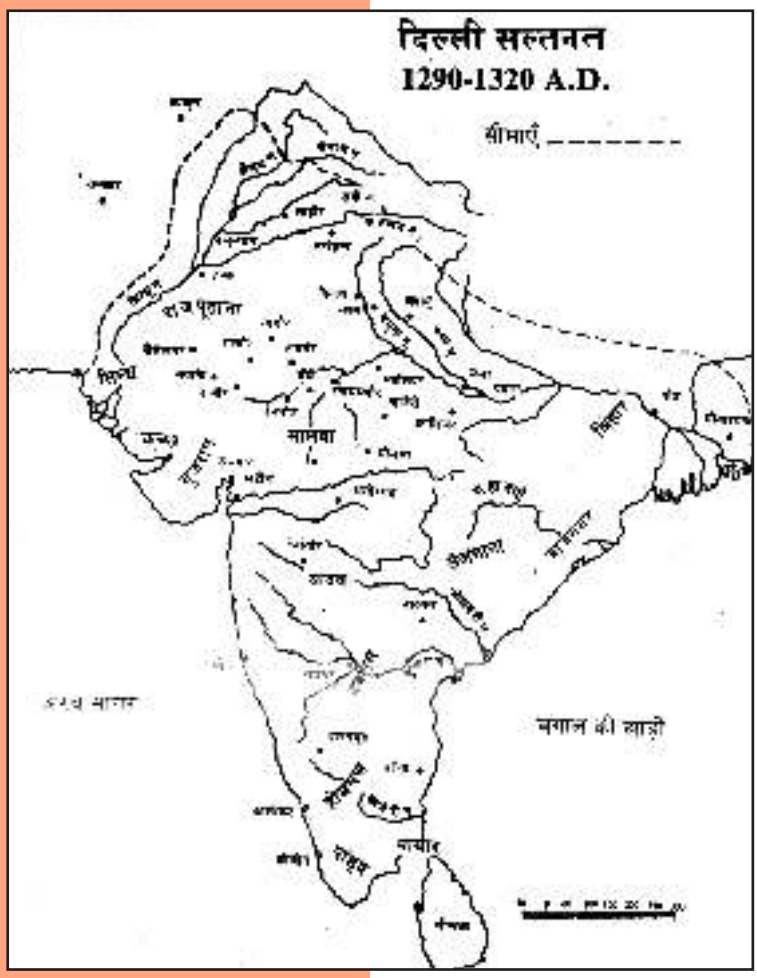

13वीं सदी के मध्य में तुर्की सुल्तानों द्वारा प्रारम्भिक विस्तार करने की लहर के शान्त हो जाने के बाद सुल्तानों का मुख्य उद्देश्य सल्तनत को दृढ़ता प्रदान करना था। अत: खिलजी वंश की स्थापना तक सल्तनत की प्रारम्भिक सीमाओं में कोई विशेष वृद्धि नहीं हो पाई। 13वीं सदी के अन्त में तुर्की शासन को खिलजी वंश द्वारा हस्तगत कर लिया गया। इस समय क्षेत्रीय प्रसार एक राजनीतिक आवश्यकता थी। पड़ोसी राज्य शक्तिशाली हो गए थे और उनके द्वारा किया गया कोई भी संगठित प्रयास दिल्ली सल्तनत के लिये संकट उत्पन्न कर सकता था। इसके अलावा अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में जहाँ एक ओर इन हमलों का कारण क्षेत्रीय प्रसार था, वहीं वह धन एकत्रित करने की ओर भी बढ़ा। 14वीं सदी ई. के प्रारम्भ में इन दोनों कारकों ने क्षेत्रीय विस्तार को गति प्रदान की।

खिलजी शासकों की सरल विजय ने यह सिद्ध कर दिया था कि जातीय निरंकुशता और अधिक समय तक राज़ नहीं कर सकती थी। खिलजी सर्वसाधारण वर्ग के थे।

इसके अतिरिक्त खिलजी वंश के शासक तुर्क थे, परन्तु इनकी शासन व्यवस्था पिछले इल्बरी-तुर्कों की शासन-व्यवस्था से भिन्न थी। इन्होंने भारतीय मुसलमानों को बड़े प्रशासनिक पदों पर नियुक्त करने की प्रथा प्रारम्भ की। खिलजियों का विद्रोह मुख्यतया भारतीय मुसलमानों का उन तुर्कों के विरुद्ध विद्रोह था, जो दिल्ली की बजाय गौर और गजनी से प्रेरणा पाते थे। इन्होंने कुलीनता के सिद्धान्त की बजाय प्रतिभा को अधिक महत्त्व दिया। खिलजी शासकों ने खासकर अलाउद्दीन ने राजनीति को धर्म से पृथक् रखने का प्रयास भी किया। इन सभी कारणों से खिलजियों द्वारा सत्ता पर नियंत्रण केवल एक वंश से दूसरे वंश का बदलाव नहीं रहा, बल्कि भारतीय इतिहास में एक नए अध्याय की शुरुआत थी। इन्हीं सभी परिवर्तनों के आधार पर मोहम्मद हबीब ने खिलजी वंश की स्थापना को 'खिलजी क्रांति' के नाम से संबोधित किया है।

अध्याय
4

तुगलक वंश
(Tughlaq Dynasty)

4.1 गियासुद्दीन तुगलक शाह (1320-1325 ई.)
4.2 मुहम्मद बिन तुगलक (1325-1351 ई.)
4.3 मुहम्मद बिन तुगलक के योजनाएँ एवं सुधार
4.4 मुहम्मद बिन तुगलक के विरुद्ध विद्रोह
4.5 फिरोज़ शाह तुगलक (1351-1388 ई.)
4.6 फिरोज़ शाह तुगलक के प्रशासनिक सुधार
4.7 फिरोज़ शाह तुगलक के उत्तराधिकारी

तुगलक वंश दिल्ली में जिस समय सत्ता में आया, उस समय सल्तनत राजनीतिक अस्थिरता से ग्रस्त थी। भारत के प्रमुख प्रांतों या राज्यों ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी थी। सल्तनत का प्रभावशाली नियंत्रण केवल केन्द्रीय स्तर तक ही रह गया था। प्रशासनिक इकाइयाँ अव्यवस्था का शिकार थीं। अत: यह स्वाभाविक था कि गियासुद्दीन तुगलक ने अपना पूरा ध्यान राज्य की आर्थिक एवं प्रशासनिक स्थिति को सुधारने की ओर केन्द्रित किया था। लेकिन बाह्य प्रांतों द्वारा अपनी स्वतंत्रता घोषित कर देने के कारण उन्हें अपने नियंत्रण में लेना अधिक महत्त्वपूर्ण हो गया था।

इस काल में सल्तनत का चरम विस्तार भी हुआ और इसका विघटन भी प्रारंभ हुआ। निरंकुश राजतंत्र की परम्परा दुर्बल पड़ी और कल्याणपरक शासन का आरंभ हुआ। धार्मिक सहिष्णुता की नीति का सर्वप्रथम कार्यान्वयन हुआ तथा धार्मिक कट्टरता का भी प्रादुर्भाव हुआ। अलाउद्दीन की नीतियों ने दिल्ली सल्तनत को साम्राज्य विस्तार की ओर अग्रसर कर दिया था। तुगलक शासकों ने इन्हीं नीतियों पर चलकर साम्राज्य का विस्तार किया। उन्होंने विभिन्न तरह से साम्राज्य का विस्तार करते हुए कल्याणकारी कार्य भी किये, किंतु दिल्ली सल्तनत को विघटन से रोकने में असमर्थ रहे।

4.1 गियासुद्दीन तुगलक शाह (1320–1325 ई.)
[Ghiyasuddin Tughluq Shah (1320–1325AD)]

गियासुद्दीन तुगलक ने खुसरो शाह को अपदस्थ करके एक नवीन राजवंश की स्थापना 1320 ई. में की, जिसे तुगलक वंश के नाम से जाना जाता है। 1320 ई. में सिंहासन पर बैठने के बाद गाज़ी तुगलक ने गियासुद्दीन तुगलक शाह की पदवी धारण की तथा उसने अगले पाँच वर्षों तक दिल्ली पर शासन किया।

गियासुद्दीन तुगलक के समक्ष कई समस्याएँ थीं। प्रांतों में विद्रोह हो रहे थे। बंगाल और सिंध पर नाममात्र का शासन रह गया था तथा गुजरात के क्षेत्रों में विद्रोह जारी था। राजपूत शासक (राजस्थान) अपनी शक्ति का विस्तार करने में लगे हुए थे, जबकि दक्षिणी राज्यों में अशांति और उपद्रव का वातावरण व्याप्त था। खुसरो शाह द्वारा अमीरों और उलेमाओं को संतुष्ट करने के लिये राजकोष खाली कर दिया गया था, जिससे वित्तीय संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई थी।

गियासुद्दीन ने सर्वप्रथम सामंतों से अपनी सत्ता की पुष्टि करवाई तथा उलेमाओं से भी इन सभी समस्याओं को समाप्त करने के लिये समर्थन मांगा और उन्होंने गियासुद्दीन के शासक बनने का समर्थन दिया। इस तरह गियासुद्दीन की सत्ता को वैधानिक स्वीकृति भी मिली और उसकी सत्ता मज़बूत हुई, लेकिन इससे सामंतों और उलेमाओं की शक्ति में वृद्धि हुई तथा निरंकुश राजतंत्र की परंपरा दुर्बल हुई।

गियासुद्दीन ने सर्वप्रथम विद्रोहों पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिये सक्रिय उपाय किये। वह एक सफल सेनानायक भी था। 1321 ई. में गियासुद्दीन ने अपने पुत्र जौना खाँ को तेलंगाना (वारंगल) के शासक प्रताप रुद्रदेव के विरुद्ध अभियान के लिये भेजा। जौना खाँ वारंगल के विद्रोह को दबाने में असफल रहा, लेकिन जौना खाँ ने 1322 ई. में पुन: वारंगल पर अभियान किया। तेलंगाना (वारंगल) पर तुर्कों का अधिकार हो गया और इसे कई प्रशासनिक भागों में बाँट दिया गया। 1324 ई. में गियासुद्दीन ने स्वयं बंगाल पर चढ़ाई की और उसे जीतकर दिल्ली सल्तनत में पुन: मिला लिया। लौटते वक्त उसने

अध्याय
5

सैय्यद एवं लोदी वंश
(Sayyid and Lodi Dynasty)

5.1 सैय्यद वंश 5.2 लोदी वंश

5.1 सैय्यद वंश *(Sayyid dynasty)*

तैमूर ने दिल्ली से वापस जाते समय खिज्र खाँ को लाहौर, मुल्तान और दिपालपुर का राज्यपाल बनाया। तैमूर के जाने के बाद दिल्ली पर कुछ समय तक दौलत खाँ ने बिना सुल्तान की पदवी धारण किये शासन किया। 1414 ई. में खिज्र खाँ ने दौलत खाँ को पराजित कर दिल्ली पर अधिकार किया और एक नए वंश की नींव डाली, जिसे सैयद वंश के नाम से जाना जाता है।

खिज्र खाँ ने सुल्तान की उपाधि नहीं धारण की, बल्कि खुद को तैमूर वंश का महाराज्यपाल कहा, परन्तु उसने दिल्ली पर स्वतंत्र रूप से शासन किया। उसके राज्य क्षेत्र में सिन्ध, पंजाब, दोआब का कुछ भाग शामिल था। उसके शासनकाल तक अनेक क्षेत्रीय राजवंशों का उदय हो चुका था, जिनमें बंगाल, मालवा, जौनपुर, राजपुताना, गुजरात, खानदेश और दक्षिण के राज्य थे। खिज्र खाँ को अपने शासनकाल में इन क्षेत्रीय राजवंशों एवं विद्रोहियों से चुनौती मिलती रहती थी। सात वर्ष शासन करने के पश्चात् 20 मई, 1421 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

खिज्र खाँ के पुत्र मुबारकशाह ने सुल्तान की उपाधि धारण की, वह योग्य सेनाध्यक्ष था तथा उसने अनेक विद्रोहों का दमन किया। मुबारक शाह अपने ही असंतुष्ट अमीरों के कुचक्र का शिकार हो गया और फरवरी 1434 में उसकी हत्या कर दी गई। उसकी मृत्यु के उपरान्त सैयद वंश में कोई योग्य शासक नहीं बचा। सरवरुल मुल्क के नेतृत्व में दरबारी अमीरों ने मुबारक शाह के भतीजे मुहम्मद शाह को सुल्तान बनाया, सरवरुल मुल्क को वज़ीर का पद मिला तथा वास्तविक शासक भी वही था। सरवरुल मुल्क की अपने विरोधियों को नष्ट करने के प्रयास के कारण अमीर वर्ग उसके विरुद्ध हो गया, सल्तनत में अराजकता व्याप्त हो गई तथा जौनपुर, मालवा और ग्वालियर जैसे राज्यों को दिल्ली सल्तनत के क्षेत्रों पर अतिक्रमण के लिये उत्साहित किया। सुल्तान मुहम्मद शाह ने अन्य अमीरों के सहयोग से वज़ीर की हत्या करवाई, किन्तु सल्तनत में विद्रोही शक्तियाँ अराजकता की स्थिति उत्पन्न कर रही थीं, सुल्तान इनसे निपटने में विफल रहा, किन्तु उचित समय पर लाहौर के अफगान राज्यपाल बहलोल लोदी की सैन्य सहायता के कारण दिल्ली सल्तनत, मालवा के सेना के आक्रमण और विध्वंश से बच गई। सुल्तान मुहम्मद शाह ने प्रसन्न होकर बहलोल लोदी को 'खान-ए-खाना' की उपाधि दी थी।

1445 ई. में मुहम्मद शाह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र अलाउद्दीन आलमशाह शासक बना, जो एक अयोग्य शासक था। उसके समय में दिल्ली सल्तनत का क्षेत्र अत्यन्त सीमित हो गया था।

क्षेत्रीय राज्यों का दबाव, विद्रोह तथा आन्तरिक समस्याओं एवं प्रशासन में अक्षम एवं अयोग्य होने के कारण आलम शाह बदायूँ चला गया जिससे सल्तनत पर बहलोल लोदी का प्रभुत्व कायम हो गया। 1451 ई. में बहलोल लोदी ने आलम शाह को सुल्तान के पद से अपदस्थ करके दिल्ली सल्तनत में प्रथम अफगान वंश की नींव रखी। आलमशाह ने इसका विरोध भी नहीं किया, बहलोल ने उसे बदायूँ में स्थित उसकी निजी सम्पत्ति पर अधिकार की अनुमति दी, जहाँ आलम शाह ने अपने जीवन के दिन सुखपूर्वक व्यतीत किये और 1478 ई. में उसकी मृत्यु हो गई। बहलोल लोदी द्वारा लोदी वंश की स्थापना के साथ ही सैयद वंश का अन्त हो गया।

इन 37 वर्षों में सैयद शासकों द्वारा अपने पूर्ववर्ती खिलजियों की तरह न तो क्षेत्र विस्तार और धन प्राप्त किया गया और न ही तुगलकों की तरह आन्तरिक प्रशासन सुदृढ़ किया गया। बल्कि इनके शासनकाल में दिल्ली सल्तनत का क्षेत्र और छोटा होता गया। सैयद शासकों द्वारा जो युद्धाभियान किये गए, वह भी सुरक्षात्मक थे, जो सिर्फ विद्रोहों के दमन या सीमावर्ती राज्यों के शासकों से किये गए, जिनमें अधिकांश में वे असफल ही रहे। इस प्रकार सैयद वंश की ऐसी कोई उपलब्धि नहीं रही, जिससे उन्हें इतिहास में आदर एवं सम्मान प्राप्त हो।

अध्याय
6

दिल्ली सल्तनत की शासन प्रणाली
(Administrative System of Delhi Sultanate)

6.1 राजत्व सिद्धांत
6.2 सुल्तान और खलीफा का संबंध
6.3 सल्तनतकालीन प्रशासन
6.4 इक्ता व्यवस्था
6.5 सल्तनतकालीन सामाजिक और आर्थिक जीवन
6.6 नगरीकरण
6.7 सल्तनतकालीन कला एवं स्थापत्य

1000 ई. में राजपूतों की सामाजिक और राजनीतिक बनावट (ढाँचा) के कारण पूरे उत्तर भारत में जो शून्यता व्याप्त हो गई थी, तुर्क शासकों ने अपनी कुशलता से राजनीतिक एकता स्थापित की एवं उसके परिणामस्वरूप एक केन्द्रीय राज्य का निर्माण हुआ और केन्द्रीकृत शासन पद्धति का विकास हुआ। तुर्कों ने अनेक नई संस्थाओं और संकल्पनाओं का भी विकास किया, जिसके तहत शक्ति का केन्द्रीकरण हुआ। साथ-ही-साथ उन्होंने भारत की परिस्थितियों के अनुसार यहाँ की परंपराओं को अपनाया।

सुल्तान की स्थिति

दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक व्यवस्था का केन्द्र बिन्दु सुल्तान था। वह शासन का सर्वोच्च अधिकारी होता था। सुल्तान बनने के लिये कोई नियम नहीं था, किन्तु परंपरा के अनुसार गद्दी पर वही बैठता था, जो शासकीय परिवार से संबंधित था या उच्च पद पर आसीन हो।

- सल्तनतकाल में गद्दी के लिये न तो ज्येष्ठाधिकार की परंपरा थी और न ही उत्तराधिकार का नियम था। अपवाद स्वरूप इल्तुतमिश ने अपना उत्तराधिकारी रज़िया को घोषित किया था।
- शासन व्यवस्था की प्रकृति राजतंत्रात्मक एवं निरंकुश थी। यह निरंकुशता मुहम्मद बिन तुगलक के समय में चरम पर पहुँच गई थी।
- सुल्तान पर इस्लामिक कानून का अंकुश होता था, लेकिन व्यावहारिक रूप से अमीर एवं उलेमा के परिप्रेक्ष्य में शक्ति संतुलन था। यद्यपि रज़िया सुल्तान के समय में जनता का भी प्रभाव प्रशासन में दिखाई दिया।
- सुल्तान को खलीफा द्वारा मान्यता प्रदान की जाती थी। ऐसे शासक सुल्तान कहे जाते थे, लेकिन धीरे-धीरे इनका पद वंशानुगत होता गया और इस प्रकार राजतंत्र का विकास हुआ।

सुल्तान के विशेषाधिकार

- खुतबे में सुल्तान का नाम पढ़ा जाना और सिक्का जारी किया जाना, संप्रभुता का प्रतीक।
- सुल्तान शाहीछत्र, पताका, राजचिह्न इत्यादि को धारण करता था।
- सभी महत्त्वपूर्ण पद और नियुक्ति सुल्तान के द्वारा की जाती थी।
- राजकीय नियम सुल्तान के आदेश होते थे एवं इन्हें सलाह देने के लिये एक विशेष संस्था होती थी जिसे 'मजलिस-ए-खलवत' कहा जाता था।
- खिज्र खाँ को छोड़कर दिल्ली सल्तनत के सभी तुर्की शासकों ने सुल्तान की उपाधि धारण की।
- दिल्ली के सुल्तानों में अधिकांश ने अपने को खलीफा का नायब पुकारा, किन्तु कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी ने स्वयं को खलीफा घोषित किया।
- खिज्र खाँ ने शाहरूख (तैमूर के पुत्र) का प्रभुत्व स्वीकार किया एवं 'रैयत-ए-आला' की उपाधि धारण की। उसके पुत्र और उत्तराधिकारी मुबारकशाह ने इस प्रथा को समाप्त कर दिया और शाह सुल्तान की उपाधि ग्रहण की।

अध्याय
7

क्षेत्रीय शक्तियाँ : 13वीं-15वीं सदी तक
(The Regional Powers: 13th to 15th Century AD)

7.1 क्षेत्रीय राज्यों का उदय
7.2 कश्मीर में ज़ैनुल आबिदीन का शासन

7.1 क्षेत्रीय राज्यों का उदय *(Emergence of Regional States)*

तैमूर के आक्रमण (1398-99 ई.) ने तुगलक राजवंश के पतन और दिल्ली सल्तनत के अंत की प्रक्रिया को तीव्र कर दिया। तुगलक साम्राज्य के विघटन के पश्चात् उत्तर भारत में केन्द्रीय सत्ता लुप्त हो गई और इस विघटित साम्राज्य के अवशेषों पर क्षेत्रीय राज्यों का उद्भव हुआ और इन राज्यों ने अपने नेतृत्व को स्थापित करने में सफलता प्राप्त की। सन् 1300 ई. से 1500 ई. के दौरान मध्य तथा पूर्वी भारत में दो प्रकार के राज्यों का उदय हुआ।

(अ) प्रथम राज्य वे थे जिनका उदय एवं विकास सल्तनत से स्वतंत्र होकर हुआ, जैसे– असम एवं उड़ीसा के राज्य।

(ब) बंगाल, जौनपुर एवं मालवा जैसे राज्य, जो अपने अस्तित्व के लिये सल्तनत के ऋणी थे।

यद्यपि ये सभी राज्य निरंतर एक-दूसरे के साथ संघर्षरत रहा करते थे। इन संघर्षों में कुलीन वर्गों, अमीरों या राजाओं तथा स्थानीय अभिजात वर्गों ने निर्णायक भूमिका अदा की। विभिन्न अफगान शासक वंशों के मध्य भी संघर्ष हुआ। जैसे–दिल्ली सल्तनत एवं जौनपुर, दिल्ली सल्तनत एवं बंगाल आदि। दक्षिण में विजयनगर और बहमनी राज्य के बीच भी संघर्ष होता रहा।

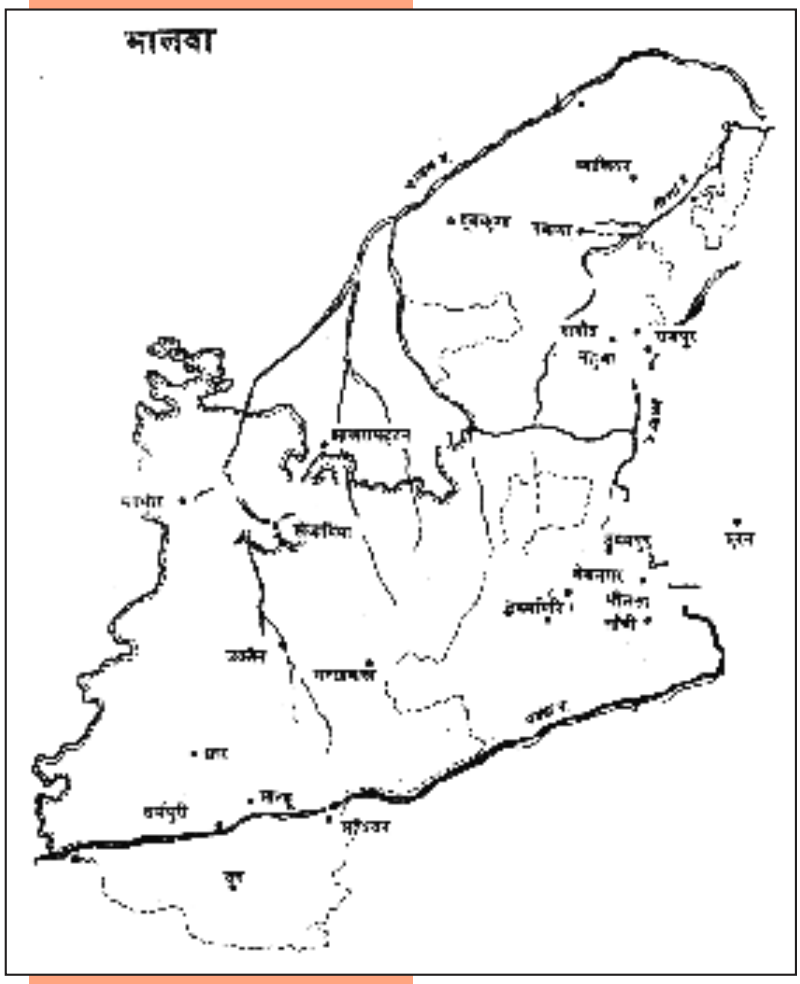

मालवा

सल्तनत के पतन ने मालवा के स्वतंत्र राज्य की स्थापना के मार्ग को प्रशस्त किया। गुजरात का पड़ोसी और प्रतिद्वंद्वी राज्य मालवा था। इसका विशेष भौगोलिक एवं सामरिक महत्त्व था। मालवा के तुगलक गवर्नर दिलावर खाँ ने सन् 1406 ई. में स्वतंत्रता प्राप्त कर ली तथा स्वयं को मालवा का राजा घोषित कर दिया। दिलावर खाँ ने अपनी पुत्री का विवाह खानदेश के मलिक राजा फारूकी के बेटे अली शेर खिलजी के साथ किया

अध्याय 8

दक्षिण भारत के राजवंश: विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य (Kingdom of South India: Vijayanagara and Bahmani Empire)

8.1 विजयनगर साम्राज्य	8.6 विजयनगर साम्राज्य: सामाजिक जीवन
8.2 विजयनगर साम्राज्य का प्रशासन	8.4 बहमनी राज्य (1347-1527 ई.)

मुहम्मद तुगलक के शासनकाल में हुए विद्रोहों के फलस्वरूप अनेक क्षेत्रीय राजवंशों का उदय हुआ। दक्षिण में विजयनगर और बहमनी राज्य की स्थापना भी मुहम्मद तुगलक के समय में ही हुई थी। जिस समय उत्तर भारत में विघटनकारी शक्तियाँ प्रबल होकर अव्यवस्था फैला रही थीं, ठीक उसी समय दक्षिण भारत में विजयनगर एवं बहमनी राज्यों के शासकों द्वारा स्थायित्व तथा प्रजा के कल्याण के लिये अनेक सामाजिक–सांस्कृतिक उपाय किये गए। इन दोनों राजवंशों में आपसी संघर्ष चलता रहा, जब तक कि बहमनी राज्य का विघटन नहीं हुआ। दक्षिण भारत में इन दोनों वंशों के शासकों का इतिहास अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

8.1 विजयनगर साम्राज्य *(Vijayanagara Empire)*

विजयनगर राज्य की स्थापना हरिहर और बुक्का नाम के दो भाइयों के द्वारा 1336 ई. में की गई थी। कहा जाता है कि हरिहर और बुक्का वारंगल के काकतीय शासक प्रताप रुद्रदेव के पारिवारिक संबंधी या सामंत थे। तुगलकों ने वारंगल पर आक्रमण कर राज्य नष्ट किया तो दोनों भाई हरिहर और बुक्का कांपिली अथवा आनेगोंडी (वर्तमान कर्नाटक) राज्य में जाकर रहने लगे। एक विद्रोही को शरण देने के कारण कांपिली पर मुहम्मद तुगलक के आक्रमण तथा विजयोपरान्त हरिहर और बुक्का को बंदी बना लिया गया। इन दोनों के इस्लाम स्वीकार करने के उपरान्त इन्हें विद्रोहियों के दमन के लिये दक्षिण भारत भेजा गया परंतु दोनों भाइयों ने दक्षिण भारत में प्रारम्भ हुई तुर्क सत्ता के विरोध में योगदान दिया तथा नए धर्म को त्यागकर शृंगेरी के प्रतिष्ठित अपने गुरु विद्यारण्य की प्रेरणा से पुन: हिन्दू धर्म स्वीकार कर कृष्णा नदी की सहायक नदी तुंगभद्रा नदी के किनारे सामरिक रूप से महत्त्वपूर्ण स्थान को विजयनगर नामक नगर के रूप में बसाया और शासन करने लगे। 1336 ई. में हरिहर विजयनगर का शासक बना। हरिहर और बुक्का द्वारा स्थापित वंश को उनके पिता संगम के नाम पर **संगम वंश** कहा गया।

1336 से 1356 ई. तक हरिहर ने शासन किया, जिसमें उसने विजयनगर राज्य का साम्राज्य विस्तार किया। 1346 ई. तक होयसल राज्य का सम्पूर्ण क्षेत्र विजयनगर की सीमा में आ गया था, लगभग 1347 ई. में बहमनी राज्य की स्थापना के साथ विजयनगर के शासकों को एक मज़बूत प्रतिद्वन्द्वी मिल गया, जिसने उनके साम्राज्य विस्तार को रोक दिया और संघर्ष प्रारम्भ हो गया।

बुक्का प्रथम (1356-1377 ई.)

हरिहर प्रथम की मृत्यु के उपरान्त उसका भाई बुक्का प्रथम विजयनगर का शासक बना। अपने भाई की तरह ही उसने भी कोई शाही उपाधि धारण नहीं की। बुक्का के शासनकाल में विजयनगर एक विशाल राज्य में परिणत हो चुका था, जो उत्तर में तुंगभद्रा घाटी से दक्षिण में तमिल तथा चेर राज्य को मिलाते हुए रामेश्वरम तक विस्तृत था परन्तु गुलबर्गा में बहमनी राज्य की स्थापना के कारण विजयनगर का उत्तर में साम्राज्य विस्तार अवरुद्ध हो गया।

बुक्का प्रथम ने मदुरै को जीता और वर्तमान केरल को भी अपने साम्राज्य में मिलाया। 1374 ई. में इसने एक दूतमण्डल चीन भेजा था। इसी के शासनकाल में बहमनी राज्य के साथ संघर्ष प्रारम्भ हुआ, जो तब तक चलता रहा, जब तक दोनों राज्यों का अस्तित्व रहा।

हरिहर द्वितीय (1377-1404 ई.)

1377 ई. में बुक्का प्रथम की मृत्यु के उपरान्त हरिहर द्वितीय शासक बना। उसने अपने पूर्ववर्ती दोनों राजाओं के विपरीत 'राजपरमेश्वर' तथा 'महाराजाधिराज' जैसी उपाधियाँ धारण कीं। हरिहर द्वितीय ने विजयनगर के साम्राज्य को और अधिक

अध्याय
9

सूफी और भक्ति आंदोलन
(Sufi and Bhakti Movement)

9.1 प्रमुख सूफी सिलसिला 9.2 भक्ति आंदोलन

मध्य काल के प्रारंभ में ही हिन्दू तथा इस्लाम धर्म में आंदोलनों का उदय हुआ था, जिन्हें भक्ति एवं सूफी मत के नाम से कालांतर में जाना गया। भक्ति आंदोलन का प्रारंभ उपनिषदों, भगवद्गीता, भागवत पुराण आदि धार्मिक ग्रंथों के आधार पर हुआ। तुर्की शासन में जब जनजीवन में घुटन तथा उदासी व्याप्त थी, तब सूफी संतों ने सामाजिक बुराइयों को दूर करने तथा प्रेम व उदारता के संदेश दिये। प्रेम, उदारता और सद्भाव इन दोनों ही आंदोलनों का मूल आधार था तथा दोनों ही लोकतांत्रिक आंदोलन थे।

इन आंदोलनों को न तो कोई राजकीय संरक्षण मिला और न ही राजनीतिक उतार-चढ़ाव से इसमें कोई विचलन आया। इन दोनों मतों की मुख्य विशेषता यह थी कि इन्होंने कर्मकाण्ड, जातिवाद, घृणा तथा सांप्रदायिकता जैसी बुराइयों की आलोचना की और समाज की नैतिक प्रगति में सहयोग दिया।

सूफी

सूफी शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के सफा शब्द से हुई, जिसका तात्पर्य है पवित्रता। इस प्रकार सूफी वे थे जो आध्यात्मिक और आचार-विचार में पवित्र थे। सूफीमत, इस्लाम की रहस्यवादी उदार प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करता था। सूफीमत का विकास इस्लाम के अंदर आई विकृतियों को सुधारने के रूप में ईरान से प्रारंभ हुआ। सूफी दर्शन एकेश्वरवादी विचारधारा में विश्वास करता था। अबुल फज़ल ने आइन-ए-अकबरी में चौदह सूफी सिलसिलों का उल्लेख किया है।

भारत में दिल्ली सल्तनत की स्थापना के पूर्व ही सूफी सिलसिले के संत भारत आ चुके थे। सूफी सिलसिला प्रमुख रूप से दो भागों में विभाजित था-

1. बा-शरा - वे सूफी सिलसिले जो इस्लामी विधान या शरीयत को मानते थे।
2. बे-शरा - इसको मानने वाले इस्लामी विधान से जुड़े नहीं थे तथा अधिकतर घुमक्कड़ प्रवृत्ति के थे।

अट्ठारहवीं सदी में प्रसिद्ध सूफी संत शाह अली वल्लाह ने सूफीमत के विकास को चार चरणों में विभक्त किया। उनके अनुसार, सूफीमत के विकास का पहला चरण सातवीं सदी से नवीं सदी तक, जिसमें सूफियों का ध्यान प्रमुखतः प्रार्थना, नाम स्मरण और उपवास की ओर था। सूफीमत का दूसरा चरण दसवीं सदी से ग्यारहवीं सदी के प्रारंभ तक रहा, इस समय के संतों की रुचि एकांत, चिंतन तथा रहस्यवादी अनुभव के प्रति थी। खानकाहों (संतों का निवास स्थान) का आरंभ इसी समय हुआ। तीसरा चरण ग्यारहवीं सदी के अंत से बारहवीं सदी के मध्य तक था, जिसमें ईश्वर के प्रति प्रेम और श्रद्धा से आध्यात्मिक और दैवीय अनुभव के प्रति अधिक रुचि थी। चौथे चरण की शुरुआत बारहवीं शताब्दी के अंत में हुई, जब सूफीमत के विचारों और सिद्धांतों की स्पष्ट व्याख्या हुई। इसी काल में शेख मुहीउद्दीन इब्नुल अरबी ने वहदत-अल-वुजूद (आत्मा-परमात्मा) की एकता का विचार दिया। सूफी रहस्यवाद वहदत-अल-वुजूद या ईश्वर के एकत्व के सिद्धांत से उत्पन्न हुआ था।

9.1 प्रमुख सूफी सिलसिला *(Major Sufi Order)*

प्रमुख रूप से पाँच सूफी सिलसिले भारत में प्रसिद्ध हुए, जिनमें चिश्ती, सुहरावर्दी, कादिरी, शत्तारी और नक्शबंदी थे।

अध्याय
10

मुगल साम्राज्य (Mughal Empire)

10.1 मुगल बादशाह: बाबर एवं हुमायूँ
10.2 शेरशाह: प्रशासक एवं सुधारक
10.3 अकबर: मुगलसत्ता का सुदृढ़ीकरण एवं विस्तार
10.4 अकबर की राजपूत एवं धार्मिक नीति
10.5 जहाँगीर (1605-1627 ई.)
10.6 शाहजहाँ(1627-1658 ई.)
10.7 औरंगज़ेब (1658-1707 ई.)
10.8 औरंगज़ेब की धार्मिक एवं राजपूत नीति
10.9 मुगल साम्राज्य का पतन
10.10 मुगलकालीन प्रशासन एवं भूराजस्व व्यवस्था
10.11 मुगलकालीन कला एवं स्थापत्य
10.12 मराठा साम्राज्य
10.13 मुगल-मराठा संघर्ष

तैमूर ने मध्य एशिया के क्षेत्र में एक विशाल साम्राज्य का निर्माण चौदहवीं सदी में किया था, किन्तु उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका साम्राज्य विघटित हो गया और उसमें अनेक छोटी-छोटी शक्तियों का उदय हुआ। तैमूर के वंशजों में बाबर भी एक था (इसके पिता का नाम उमर शेख मिर्जा तथा माता का नाम कुतलुग निगार खानम था) इसके पिता का नाम उमर शेघ मिर्जा तथा माता का नाम कुतलुग निगार खानम था। जो मुगल साम्राज्य का संस्थापक बना। बाबर का पैतृक राज्य फरगना था। मध्य एशिया के उज्बेक शासकों ने लंबे संघर्ष के बाद बाबर को फरगना से निकाल दिया। बाबर ने 1504 ई. में काबुल का राज्य जीता और कुछ समय बाद कंधार की विजय में भी सफल हुआ। इसके पश्चात् ही उसे भारत की ओर ध्यान देने का अवसर मिला।

10.1 मुगल बादशाह: बाबर एवं हुमायूँ *(Mughal Emperors: Babur and Humayun)*

बाबर *(1526–1530 ई.)*

1520-21 ई. में बाबर ने एक बार फिर सिंधु नदी पार की तथा भिरा एवं स्यालकोट पर विजय प्राप्त की। इस तरह हिन्दुस्तान में दाखिल होने के दरवाज़े अब उसके कब्ज़े में थे। लाहौर के शासक ने उसके सामने आत्मसमर्पण कर दिया। उसने भारत की ओर बढ़ना जारी रखा, लेकिन इसी समय कंधार में विद्रोह हो गया और वह कंधार विद्रोह-दमन हेतु कंधार चला गया। लगभग 1522 ई. के मध्य में दौलत खाँ के बेटे दिलावर खाँ के नेतृत्व में एक दूतमंडल बाबर के पास पहुँचा। उन्होंने बाबर को भारत आने के लिये आमंत्रित किया और सुझाव दिया कि उसे इब्राहीम लोदी को अपदस्थ कर देना चाहिये, क्योंकि वह अत्याचारी है और उसे अपने अमीरों का समर्थन प्राप्त नहीं है। संभवत: राणा सांगा का भी निमंत्रण बाबर के पास पहुँचा। बाबर ने 1525 ई. में पंजाब का क्षेत्र विजित करने के पश्चात् भारत अभियान प्रारंभ किया तथा 21 अप्रैल, 1526 ई. को पानीपत के युद्ध में इब्राहीम लोदी को परास्त किया जिसमें उसकी मृत्यु हो गई। पानीपत की लड़ाई को भारतीय इतिहास में निर्णायक युद्धों में गिना जाता है। इस लड़ाई से लोदी शक्ति समाप्त हो गई और दिल्ली तथा आगरा तक के क्षेत्र पर बाबर का नियंत्रण स्थापित हो गया। इस युद्ध ने बाबर की आर्थिक स्थिति को काफी सुदृढ़ किया, क्योंकि इब्राहीम लोदी ने आगरा (राजधानी) में जो दौलत जमा कर रखी थी, उस पर बाबर का कब्ज़ा हो गया था।

पानीपत की विजय के उपरांत बाबर के जीवन में एक नया अध्याय शुरू हुआ। अब उसकी राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र मध्य एशिया से हटकर उत्तरी भारत में स्थापित हो गया था। पानीपत की सफलता ने बाबर को भारतीय शासकों की रण पद्धति की कमज़ोरियों से परिचित करवाया और उसके आत्मविश्वास को भी बढ़ाया। इससे उत्तरी भारत में उसकी सत्ता प्रभावित हुई, लेकिन अभी भी लोदियों का प्रभाव गुजरात, बिहार एवं बंगाल पर था, जिस पर अभी भी उनकी शक्ति बनी हुई थी।

पानीपत की विजय के तुरन्त बाद बाबर को 1527 ई. में राजपूतों के साथ खानवा की लड़ाई लड़नी पड़ी। राजपूतों द्वारा इस अभियान का मुख्य कारण बाबर का भारत में रहने का निश्चय था। राणा सांगा की धारणा थी कि बाबर भी अन्य विदेशी आक्रमणकारियों की भाँति देश को लूटकर वापस चला जाएगा। संभवत:, इसी कारण उसने इब्राहीम लोदी के विरुद्ध बाबर को सहायता देने का आश्वासन दिया था। परन्तु जब बाबर ने भारत में रहने का निश्चय किया, तब उसने एक विदेशी की

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 8750187501, 011-47532596